International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दक्षिणी–पूर्वी देश 'लाओस' की रामकथा–एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 सुषमा नारा
असिस्टेंट प्रोफेसर
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।

हरि अनंत, हरि कथा अनंता। वाल्मीकि रामायण के बाद राम से जुड़ी अनेकों कथाएं कुछ परिवर्तन के साथ कई देशों में विभिन्न रूपों में प्रचलित हुई। मुख्य रूप से ये कथाएं एशिया के दक्षिण–पूर्वी देशों में विभिन्न नामों के साथ प्रचलित हुई।

थाईलैंड में इस रामकथा को रामकियन अर्थात् रामकीर्ति, कंबोडिया में रामकेर, म्यंमार में रामवत्यु या रामवस्तु, मलेशिया में हेकायत तथा लाओस में फ्रलक, फ्रराम या फालाक, फा लाम अर्थात् श्री लक्ष्मण व श्रीराम कहा जाता है। लाओस में सभी उदात्त पात्रों के नाम के आगे 'फ्र' अर्थात् श्री लगाना आवश्यक होता है।[1]

वस्तुतः इन सभी देशों की रामकथा का संबंध मूलरूप से श्रीराम के इस कथानक से है जिसे महर्षि वाल्मीकि ने अपनी 'रामायण' में श्लोकबद्ध किया है। इन सभी देशों में श्रीराम कथा की मूल घटनाएं एक जैसी ही हैं। वाल्मीकि रामायण के कथानक में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। परन्तु घटनाओं का विस्तार, पशु–पक्षियों का वर्णन, प्राकृतिक चित्रण, रीति–रिवाज, तिथि–पर्व और भौगोलिक स्थिति, प्रत्येक देश में उसकी स्थानीय परिस्थितियों से लिया गया है। इसलिए लाओस की रामकथा अपनी पड़ोसी देशों से बहुत साम्य रखती है।[2] जबकि वाल्मीकि रामायण के साथ उतनी समानता नहीं है।

लाओस की रामकथा के संस्करणः–

लाओस में रामकथा के दो संस्करण उपलब्ध हैं। प्रथम लुआड. प्रबाड. नगरी का संस्करण, द्वितीय वियेनत्यान की राजधानी और वियेनत्यान प्रदेश में प्रचलित संस्करण।[3] जबकि वाल्मीकि रामायण के पांच संस्करण उपलब्ध हैं। औदिच्य संस्करण, गौड़ीय संस्करण, दाक्षिणात्य संस्करण, पश्चिमोत्तरीय संस्करण, आलोचनात्मक संस्करण।[4] लुआड. प्रबाड. की रामकथा उस नगरी के दो प्रसिद्ध मन्दिरों, वाटपऽ के ऽ तथा वाटमाइ में भित्ति पर चित्रित है। जबकि वियेनत्यान की रामकथा मन्दिरों में चित्रों और लिखी गई पाण्डुलिपियों पर आधारित है। वियेनत्यान संस्करण का एक ग्रन्थ 'फालाक फालाम' (श्री लक्ष्मण, श्रीराम) नाम से प्रसिद्ध है। यह भारतीय रामायण पर ही आधारित है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

लाव (लाओस) रामायण के पात्रः–

लाव–रामायण के पात्रों का वाल्मीकि रामायण से विशेष संबंध दिखाई नहीं देता। लाव–रामायण अपनी ही लाव संस्कृति, परम्परा, वेश–भूषा, भोजन, दैनिक जीवन का ही अनुसरण करती है। जिसमें स्थान–स्थान पर लम्बे श्रृंगारिक वर्णन है। जबकि वाल्मीकि रामायण एक विशेष मर्यादा से वर्णित है। लाव भाषा की अपनी विशिष्ट स्वर–योजना के कारण वाल्मीकि–रामायण के पात्रों के शास्त्रसम्मत नामों में परिवर्तन हुए हैं।[5] जैसे–

संस्कृत	**लाव**
राम	पा लाम, फा लाम, लम्मा
लक्ष्मण	पा लाक, फा लाक
रावण	हाफनसुआन, पोम्मचाक, थोसोकोन्थो
हनुमान	हनुमोन
सीता	नांग सीडा
लंका	लंग्का
सुग्रीव	सुक्रीप, साड.खीप आदि

लाओस में रामकथाः–

लाओस की रामकथा के राम सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणा स्त्रोत है और समाज में ऐसे पुरूषोत्तम हैं जो सभी वर्गों की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं। कथानुसार अयुध्या (अयोध्या) फा लाम (राम) की राजधानी है। फा लाम श्याम वर्ण के हैं। थोसोरथ (दशरथ) उनके पिता हैं। कौसल्या उनकी माता है। जिनके पुत्र हैं–फा लाम और फा लाक। कौसल्या थोसोरथ की पहली पत्नी है और उनकी दूसरी पत्नी है–कैकेसी। उनके भी दो पुत्र हैंः– फा फ्रोत (प्रिय भरत) और फा सत्रु (प्रिय शत्रुघ्न)। इन सभी पुत्रों का 'बास्सी' संस्कार होता है, बास्सी का अर्थ है–आत्मा का आह्वान या आध्यात्मिक शक्ति को जागृत करना।[6]

राजा थोसोरथ (राजा दशरथ):–

कथानुसार एक बार राजा थोसोरथ के विद्रोहियों के साथ लड़ाई करते हुए रथ का एक पहिया अलग हो गया। उस समय कैकेसी के द्वारा सहायता किए जाने पर राजा उसे वर देते हैं। उचित समय आने पर कैकेसी अपने दो वर मांगती है, एक जिससे उसका पुत्र फा लाम

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के स्थान पर राजा बन जाए और छोटे लड़के का फा सव्रु को युवराज बनाया जाए। हनुमोन (हनुमान) कथा के विस्तार होते–होते हनुमोन नामक पात्र का जन्म दर्शाया गया है।

हनुमोनः–

वाल्मीकि रामायण में हनुमान[7] नाम से प्रसिद्ध हैं। हनुमोन की माता का नाम नांग अत्चना अर्थात् देवी अंजना है और पिता का नाम फाफाइ (वायु) है। हनुमोन को यहां अत्यन्त प्रभायुक्त, श्वेत रंग का दिखाया गया है। बचपन से वे पूर्ण युवावस्था में ही थे। वे पैदा होने के साथ ही खाने, बोलने व उड़ने लगे थे। लाओस रामकथानुसार एक बार उन्होंने सूर्य को पका हुआ फल समझकर खाना चाहा तो सूर्य ने उन्हें जला दिया। उनका एक बाल ही केवल शेष बचा जो सूर्य के रथ से चिपका रह गया था। सूर्य ने इस बाल से उसका पुनर्निमाण किया और कहा "तुम पृथ्वी पर जाओ और फा लाम के अनुचर बन जाओ, उनका अनुचर बन जाने पर तुम अजेय बन जाओगे।" [8] इस प्रकार इस रामकथा में हनुमान नामक पात्र का भी वर्णन है, जो घटना की दृष्टि से वाल्मीकि रामायण से कुछ परिवर्तित है। लाओस के दूसरे संस्करण वियेनत्यान में भी इसी प्रकार की कथा वर्णित है, जिसने लंका दहन करके सीता की खोज करने में सहायता की।

नांग सीडा (देवी सीता):–

लाओस कथानुसार देवी सीता, हाफन (रावण) की पुत्री है। इन्द्र की पत्नी ने ही नांग सीडा के रूप में रावण के घर जन्म लिया है। उसके जन्म के दैवज्ञों ने भविष्यवाणी की कि इस बालिका का जन्म रावण के लिए शुभ नहीं है, यह क्लेश उत्पन्न कराने व कष्ट प्रदान करने वाली है, इससे रूष्ट होकर हाफन (रावण) ने सीडा के शरीर के एक भाग को काटकर नदी में फेंक दिया। इन्द्र की पत्नी ने इसे देखा और उस अंग से उसे एक सुन्दर रूपवती बना दिया। राजा छनक (जनक) नाम से ऋषि ने पुष्प चयन करते हुए सीडा को देखा और अपने साथ अपने घर ले आये और बेटी के रूप में स्वीकार कर लिया। उसके विवाह योग्य हो जाने पर उसने घोषणा की कि जो भी भारी धनुष को उठा लेगा, वह उसका विवाह उसी के साथ करा देगा। इस प्रकार नांग सीडा का विवाह फा लाम अर्थात् राम के साथ हुआ। इसी प्रकार की साम्य रामकथा दूसरे संस्करण वियेनत्यान में भी मिलती है।[9]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साड. खीप (सुग्रीव) और फाली (बाली):–

लाओस रामायण के अनुसार नांग खाइसी (देवी काय श्री) और फा इन से फा ली (बाली) का जन्म हुआ। नांग खाइसी और सूर्य के सहवास से साडखीप (सुग्रीव) का जन्म हुआ। लेकिन किसी के यह बताने पर कि फा ली और साडखीप दोनों उसके नहीं बल्कि किसी और के पुत्र हैं, उसने उन्हें दोनों बालकों को वानर बनने का शाप देकर जंगल में फेंक दिया। उसके बाद फा इन व सूरिय को जब ज्ञात हुआ कि ये उन्हीं के पुत्र हैं जो उन्होंने उनके लिए खिटकिन (किष्किन्धा) नामक नगरी का निर्माण कराया। दोनों के अलग–अलग महलों को बनवाया।[10] वियेनत्यान में प्रचलित रामायण–संस्करण में सुग्रीव को बड़ा और बाली को छोटा भाई बताया गया है। जबकि लुआड. प्रबाड. की कथा वाल्मीकि–रामायण का अनुसरण करती है। इन दोनों संस्करणों में इसी प्रकार की लोक धारणाओं पर आधारित कई भेद हैं।

समानखा (शूर्पणखा):–

शूर्पणखा का चरित्र भी वाल्मीकि रामायण से मेल खाता है। समानखा अर्थात् शूर्पणखा यक्षिणी थी। उसने सुन्दर स्त्री का रूप धारण करके फा लाम को अपनी और आकर्षित करना चाहा परन्तु फा लाम ने उसकी चाल को समझकर उसे दण्डित किया। उसने इसकी शिकायत अपने भाई थोसोकोन्थो (दशकण्ठ) से की और वहीं से युद्ध जैसी स्थिति का प्रारम्भ हुआ।

सीडा का हरण फा लाम, फा लाक का हनुमाने से मिलनः–

हाफन मारीस (मारीच) को सुवर्ण मृग बनाकर सीता की कुटी के सामने भेजता है, सीता फा लाम को उसे मारकर लाने को कहती है। राम चले जाते हैं, परन्तु जब लौटते हैं तो फा लाक, फा लाम को सीडा नहीं मिलती और वे दोनों उसे ढूंढने निकलते हैं। मार्ग में घायल जटायु मिलते हैं और अपनी दशा का वर्णन करते हैं व जटायु प्राणान्त हो जाते हैं।

फा लाक, फा लाम सीडा को खोजते हुए हनुमान से मिलते हैं, फिर बाणों वाली घटना घटित होती है और हनुमोन उनसे मित्रवत् व्यवहार करते हैं और सीडा को खोजने में फा लाक, फा लाम की सहायता करते हैं। हनुमोन लंका पहुंचकर लंका दहन करते हैं। हाफन को ज्ञात होने पर उसे पकड़ लेते हैं और वह हाफन को चेतावनी देकर लौट आते हैं। [11] फा लाम को वापस लौटकर सीडा के मिलने की सूचना देते हैं जिससे श्रीराम व लक्ष्मण को कुछ आश्वासन मिला। मुद्रा रूपी पहचान देकर वायु पुत्र हनुमान ने देवी सीता की कही हुई सारी बातें क्रमशः अपनी वाणी द्वारा पूर्ण रूप से बताई। [12]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at:
Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

फा लाम व हाफन युद्धः–

युद्ध के समय दोनों ओर की सेनाएं कटिबद्ध हैं। हनुमोन जिन्हें युद्ध स्थल पर हुल्लमान भी कहा गया है, वे युद्ध के लिए अपनी वानर सेना के लिए तत्पर हैं। हाफन (रावण) सुआन विभेक (विभिषण) को सशरीर उठाकर अपने राजमहल से बाहर फेंक देता है। वह एक नीलकम के सरोवर में आ गिरता है, जिसके किनारे फा लाम व फा लाक खड़े होते हैं, वे उसे अपने साथ मिला लेते हैं। [13]इस प्रकार वे भी युद्ध में राम का ही साथ दते हैं। सीडा की अग्नि परीक्षा का वर्णन भी है। अंत में रावण की मृत्यु हो जाती है।

कथा के इस स्थान पर ऐसा प्रतीत होता है कि विभीषण व्यक्ति न होकर उस सामूहिक आध्यात्मिक विध्वंश और पीड़ा का प्रतीक है जो उन लोगों को सहनी पड़ती थी जो हाफन सुआन के अभिमान और कुतर्कपूर्ण आत्मविनाशी हठ से टकराने का साहस करते थे। वाल्मीकि रामायण में विभीषण जब राम के पास आते हैं, उस समय केवल युद्ध संबंधी बाते होती हैं। परन्तु ज्यों–ज्यों रामकथा अपने मूल से दूरी होती गई उसमें बहुत सी अन्य घटनाओं के साथ श्रीराम की छवि भी परिवर्तित होती गई।

लाव–रामायण और वाल्मीकि रामायण में प्रमुख अंतरः–

- वाल्मीकि रामायण में राम को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। सम्पूर्ण रामायण का कथानक उसी के इर्द–गिर्द घूमता है। जबकि लाव रामायण में श्रीराम को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है, कथानक में उसकी उपस्थिति एक अपरिचित की सी लगती है।
- लाव कथा का नायक रावण है। वह एक चतुर व सुशिक्षित युवक है, जो शरीर की सौंदर्य–सुषमा से सम्पन्न इन्द्र का विशेषकृपा पात्र है। वाल्मीकि रामायण की भांति उसके दस सिर और बीस भुजाएं नहीं है।
- लाव कथा में सीता की कोई विशेष भूमिका नहीं है, वह रावण की पुत्री है और लंकेश्वर के आकर्षण से पूर्णतया मुक्त नहीं है। जबकि वाल्मीकि रामायण में सीता की मुख्य भूमिका है। वह जनक पुत्री है और सदाचार युक्त है।
- लाव रामायण में हनुमान श्रीराम के पुत्र कहे हैं और वानर प्रजाति के हैं। जबकि वाल्मीकि रामायण में हनुमान श्रीराम के पुत्र नहीं हैं।
- लाव–रामायण में सब पात्र लाव–भाषा में बात करते हैं, उनके आचरण लाव सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल हैं। जबकि वाल्मीकि रामायण में प्रचलित भाषा संस्कृत है।[14]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि राम केवल हिन्दू के लिए ही नहीं बल्कि किसी भी धर्म वाले के लिए, आस्तिक व नास्तिक सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं क्योंकि वे पुरूषोत्तम हैं, उनका पौरूष उत्तम कोटि का है क्योंकि वह दूसरों की रक्षा के लिए विनियोजित है।

लाओस की रामकथा में स्थानीय घटनाएं परम्पराएं, संस्कृति मिश्रित हैं जिसके कारण रामायण की मूल कथा से कहीं–कहीं परिवर्तित दिखाई देती है। वहां की रामकथा पर बौद्ध धर्म का प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। यहां की रामायण लाव भाषा में रची गई है। जो यहां की अधिक पूर्ण व परिपक्व भाषा है। लाओस की सम्पूर्ण रामकथा भित्तिचित्रों के रूप में अंकित है। बीच में बौद्धों के चित्र होने से बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

लाओस की रामकथा के दोनों संस्करणों में भी एक लोकधारा व एक ही संस्कृति होने के बाद भी कुछ–कुछ कथानक अलग प्रतीत होते हैं। लुआड. प्रवाड. में सुग्रीव बाली से छोटा दिखाया गया है। जबकि वियेन्त्यान संस्करण में सुग्रीव बाली से बड़ा है। लेकिन दोनों संस्करणों में साम्यता अधिक है। लाओस के साथ–साथ सम्पूर्ण दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों में रामायण के पात्रों अर्थात् देवताओं के रंग व प्रतीक भी निश्चित किए गए हैं। विष्णु के अवतार पीत वस्त्र धारण करते हैं, इसलिए श्रीराम की पताका पीली दिखाई जाती है। हनुमान का रंग लाल दिखाया जाता है।

इस प्रकार लाओस व दक्षिण–पूर्व–एशियाई देशों में भारतीय संस्कृति का वहां के शासन, भाषा, साहित्य, धर्म एवं कला आदि पर बहुत प्रभाव पड़ा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.abhivyakti.hindi.org ramkatha
2. लाओस में रामकथा, श्रीमती कमला रत्नम्, पृष्ठ सं0 42, प्रथम संस्करण, कानपुर।
3. वही, पृष्ठ संख्या 43
4. रामायण कथा, पं लोकनाथ द्विवेदी सिलाकरी, साहित्य भवन (प्रा0) लिमिटेड, इलाहाबाद।
5. लाओस में रामकथा, श्रीमती कमला रत्नम्, पृष्ठ सं0 48, प्रथम संस्करण, कानपुर।
6. वही, पृष्ठ संख्या 49
7. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, गीताप्रैस, गोरखपुर।
8. लाओस में रामकथा, श्रीमती कमला रत्नम्, पृष्ठ सं0 52, प्रथम संस्करण, कानपुर।
9. वही, पृष्ठ संख्या 53
10. वही, पृष्ठ संख्या 51
11. वही, पृष्ठ संख्या 55
12. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, गीताप्रैस, गोरखपुर, सुन्दरकाण्ड, सर्ग–65।
13. लाओस में रामकथा, श्रीमती कमला रत्नम्, पृष्ठ सं0 93, 95, 96, प्रथम संस्करण, कानपुर।
14. वही, पृष्ठ संख्या 48, 49